वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर – 2020

मनुष्य नहीं जानता

परलोक सत्य है

आओ कुछ वायदा करें

देव – दर की एक पुजारन

देव समाज के वृक्ष....

श्रीमती पूजनीया जी की.....

बाकि पृष्ठ 20

(30) पूजनीय भगवान जब खाना खाते, तो वह कई बार जो चीज़ अच्छी बनी हुई होती उसकी तारीफ़ करते, और जो ख़राब बनी हुई होती, उसे खराब कहते, तब माता पूजनीया जी झट पूजनीय भगवान से यह कहतीं, कि यह अच्छी चीज़ अमुक स्त्री वा पुरुष ने बनाई है, ताकि वह भगवान देवात्मा के अधिक निकट हो सके। परंतु वह किसी ख़राब बनी हुई वस्तु के बनाने वाले का नाम अपने आप न बताती थीं, कि वह कहीं भगवान से दूर न हो जावे। अर्थात् औरों को भगवान देवात्मा के निकट करने का काम तो वह पूरे ज़ोर शोर से करती थीं, परंतु उन से दूर करने वाली बात वह कभी न कहतीं। मैंने कई बार यह कहा कि माता जी जिस का क़सूर है, वह भुगते, आप अपने ज़ुम्मे क्यों लेती हो, तब कहतीं कि यह जन पूजनीय भगवान से दूर हो जाएगा।

(31) भगवान देवात्मा अपने देव बोधों से परिचालित होकर जहां कहीं कोई खराबी या अहित होता देखते, वहीं उसके दूर करने के लिए बेचैन हो जाते थे और अहित वा अनुचित गति करने वाले को रोकने का पूरा संग्राम करते थे। इस लिए उनके चरणों में रहना बहुत ही कठिन काम था। माता पूजनीया जी धन्य हैं, जो वर्षों के वर्ष हर समय भगवान देवात्मा के पास रहकर और बार बार उनके देव बोधों से रोके टोके जाने पर भी, हां दिन में कई कई बार रोके टोके जाने पर भी, पूजनीय भगवान के संबंध में श्रद्धावान और पूरी वफ़ादार और सेवाकारी रही हैं।

अपनी आख़िरी बीमारी में भी जब कि वह बहुत तकलीफ़ की हालत में थीं, तब भी उन्होंने मुझ से कई बार भगवान देवात्मा की छवि मंगवाकर उनके दर्शन करके हाथ जोड़कर बार बार उन्हें प्रणाम किया। यह बात प्रगट करती है, कि उन के भीतर भगवान देवात्मा के संबंध में किस क़दर गहरी श्रद्धा और आकर्षण वर्तमान था।

(32) आख़िरी समय में उन्होंने अपने सब संबंधियों से मिलना जुलना बिलकुल बंद कर दिया था। उनकी यह आज्ञा थी कि मेरा कोई संबंधी मेरे पास न आवे। कहां आम लोगों की यह हालत है, कि आख़री समय में एक एक संबंधी को मिलना चाहते हैं। माता जी सांसारिक संबंधियों के अनुचित मोह बंधन से बिलकुल ऊपर थीं।

(33) माता पूजनीया जी के भीतर अपना निज का धर्म साधन करने के लिए तो पूरी निष्ठा और अनुराग था ही, किंतु जो उनके चरणों में रहता उसे भी साधन भजन में लगा देती थीं। एक बार सोलन में उनके पास उनकी एक संबंधी स्त्री कुछ दिनों के लिए ठहरी हुई थी, तब उन को माता जी ने अपने पास से धर्म पुस्तकें देकर साधन भजन में लगा दिया था, जिस से उस को बहुत लाभ हुआ था।

इस प्रकार माता पूजनीया जी भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को ग्रहण करके ऐसे पवित्र और उच्च जीवन में ढल गई थीं, कि जो निहायत ही हितकर, मधुर, कोमल, सुगन्धि दायक उच्च भावों से भरा हुआ जीवन था। जैसे एक एक गुलाब वा चम्बेली वा मोतिया का पेड़ अपने सुंदर सुंदर फूलों और सुगन्धि से सुहावना प्रतीत होता है, उससे भी बढ़कर माता पूजनीया जी का जीवन अपने धर्म भावों के फूलों से निहायत ही सुंदर और हर्षदायक वा खुशबूदार था। जिस तरफ़ से देखो उसी तरफ़ से ही सुंदर ही सुंदर, हितकर ही हितकर, सुगन्धि दायक और महकदार था। उनके भीतर इस क़दर सद्गुण वर्तमान थे, जिन को देख देख कर मेरा तुच्छ हुदय उनके श्री चरणों में झुकता है, और उन्हें धन्य धन्य कहता है और जिस परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपने प्रभावों के द्वारा उनके जीवन को ऐसा सुंदर बना दिया था, उन को भी मैं बारंबार धन्य धन्य कहता हूं।

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 10
अक्तूबर – 2020
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य नहीं जानता

मनुष्य चाहे बुद्धि जीवी प्राणी है, मान्सिक शक्तियों का वारिस है। सोच समझ रखता है। आंखें, दिमाग रखता है, एक एक पक्ष में काफी कुछ जानता है। परन्तु इतना सब कुछ होकर भी, अधिकतर अन्धेरे का ही जीव है। अज्ञान और अन्धेरे का शिकार है। एक सुन्दर भजन में एक पंक्ति आती है "है अन्धेरा हमरे भीतर और बाहर चारसू" यह सधारणत: हम सब के लिए ही उपयुक्त है। मैं अन्धेरे का वासी हूँ, इससे भी इन्सान अनजान है। वह तो यही समझता है कि मैं सब कुछ जानता हूं।

यह ठोस सचाई है कि हम सब अन्धेरे के जीव है। अब हमने देखना है कि अन्धेरा क्या है और कहां है, जिसका अकसर हमें पता नहीं रहता। हम कौन से पक्षों में अन्धेरे में हैं और अज्ञानी हैं। निम्नलिखित मनुष्यों के जीवनों के मोटे मोटे अन्धेरे पक्षों की ओर ध्यान ले जाने का यत्न करेंगे।

मनुष्य नहीं जानता मैं कौन हूं, या क्या चीज़ हूं। मेरा वजूद क्या है? मनुष्य अपने आपको केवल शरीर ही देखता है, शरीर के बिना उसके भीतर कुछ और भी है, इस सम्बन्ध में लाखों, करोड़ों लोग अन्धेरे में रहते हैं और अन्धेरे में ही रहकर अपना सारा जीवन व्यतीत कर जाते हैं। मनुष्य पशुओं की तरह शारीरिक अवश्यकताओं को देखता और जानता है। शारीरिक सुखों को समझता है शारीरिक सुखों की पूर्ति वा तृप्ति के लिए ही उसका सारा जीवन व्यतीत, होता है। बहुत कम ऐसे इन्सान हैं जिनका ध्यान शारीरिक सुखों की सीमा से परे जाता हो। मनुष्य शरीर को ही अपनी हस्ती जानता है और उसकी देख रेख, उसके सुखों को जुटाने में लगा रहता है। मनुष्य नहीं जानता कि मेरी हस्ती में मेरे वजूद या ढांचे में असल, मुख्य और सार वस्तु शरीर के बिना कुछ और चीज़ भी है।

मनुष्य नहीं जानता कि जगत का फैलाव है, यह विश्व, यह ब्राह्मण्ड वा नेचर क्या है? यह केवल हमारी धरती, सूर्य्य, चन्द्रमा तक ही सीमित नहीं इसका फैलाव कितनी दूर दूर तक है। हां मनुष्य अपनी सारी कल्पना से और ज़ोर लगाकर भी नेचर के फैलाव को जान नहीं सकता। इसकी विशालता, असीमता वा अनन्त होने की कल्पना ही कर सकता है। मनुष्य इस जगत को देखता है। उसमें पैदा होता है, उसमें ही विचरता है, अन्त में उसके अन्दर ही लोप हो जाता है। परन्तु इस सारे फैलाव से बहुत कुछ अनजान ही रहता है।

मनुष्य नहीं जानता कि ब्राह्मण्ड वा विशाल नेचर को किसने बनाया है? यह कितनी पुरानी है? कब बनी? वह किस मसाले वा पदार्थों को लेकर बनी है। वह मसाला कहां से आया है। नेचर कितनी देर रहने वाली है? इसका अन्त कब होना है? इसका बनाने वाला वा रचिता कौन है? या कोई नहीं है। या यह अपने आप ही है। यह महान वा अति विशाल नेचर में रहकर, इसके सूर्य्य, चन्द्रमा, ऋतुएँ, जलवायु, पानी, हवा, खाद्य पदार्थों पर निर्भर रहकर भी

मनुष्य इस नेचर के सम्बन्ध में बहुत कुछ अन्धेरे और अज्ञान में रहता है।

मनुष्य नहीं जानता कि इस महा विशाल नेचर की हस्ती को कौन चला रहा है? सूर्य, चन्द्रमा, झीलें, दरिया, सागर, हवाएं सब कौन चला रहा है? मनुष्य नहीं जानता कि नेचर के भीतर शक्तियां काम करती है। वह शक्तियां क्या हैं? उनका कारज क्या है? एक एक शक्ति का स्वभाव क्या है? वह क्या करती है और कैसे काम करती है?

मनुष्य नहीं जानता कि नेचर के अपने नियम हैं। उन नियमों का इस विशाल नेचर पर राज है। जो नियम पूरा होता है, उसका परिणाम अवश्य निकलता है या पैदा होता है। नेचर का प्रत्येक अस्तित्व, प्रत्येक वस्तु, हर अंश पर नेचर के नियमों का राज है। मनुष्य का वजूद भी नेचर का एक अंश है, उस पर भी नेचर के नियम हावी हैं। मनुष्य का शरीर, उसके स्वास्थ्य और रोगों के नियम हैं। बुद्धि विकास के नियम हैं, उसके मन या आत्मा के ऊपर भी नेचर के नियम हावी हैं। नेचर के नियम भले, उच्च और श्रेष्ट भी हैं और पूरे होते हैं तो भला अवश्य होता है, विकास होता है। नेचर के खराब, हानिकारक नियम भी हैं, वह जब पूरे होते हैं तो सदा हानि, खराबी वा नाश आता है। जिस नियम के अधीन नेचर की जो हस्ती होती है, उसका उसी प्रकार का नतीजा भी पैदा होता है। नेचर के अस्तित्व उसी प्रकार अपना रूप ग्रहण करते जाते हैं।

परिवर्तन विश्व का अटल नियम है। यह विश्वव्यापी है। नेचर की बनावट दो प्रकार की चीजों से बनी है। एक जड़ है, तो दूसरी शक्ति है। नेचर का हर अस्तित्व भी इन दो चीजों से मिलकर बना है। जहां शक्ति है वहां परिवर्तन है। जैसी शक्ति वैसा ही परिवर्तन आता है। मनुष्य नेचर की प्रकृत शक्तियों के बारे में अन्धेरे में है। मनुष्य के हृदय में भी बहुत सारी शक्तियां ठाठें मारती हैं। मनुष्य उनके विषय में अन्धेरे में ही रहता है। उनके प्रकृत रूप की ओर से अनजान है। मनुष्य अपने आप को नहीं जानता, न ही देखता है। अपनी हार्दिक शक्तियों को जानना ही अपने आपको जानना है। अकसर मनुष्य अपनी परिचालिक शक्तियों का प्रकृत ज्ञान नहीं रखता और न ही उनको जानने की कोई इच्छा रखता है। वह और बड़े बड़े कारजों के करने में ही मस्त रहता है। नेचर की प्रत्येक वस्तु की तरह मनुष्य भी हर पल बदल रहा है, वह इस सत्य को नहीं जानता और न ही साफ देख रहा है। इस सम्बन्ध में बड़े चतुर, विद्वान, बड़े पदधारी बहुत कुछ अन्धेरे में रहने के लिए हैं। मनुष्य नहीं जानता उसकी चाल क्या है? वह किस ओर जा रहा है? उसका क्या परिणाम निकलेगा। इस पक्ष में मनुष्य अकसर अन्धेरे में रहता है। अपने परिणाम को न जानने के लिए मजबूर है। वह बन रहा है या बिगड़ रहा है। मनुष्य अपने विनाश और विकास की ओर से अनजान है। उस का प्रकृत ज्ञान नहीं रखता।

मनुष्य नहीं जानता कि नेचर के भीतर स्थूल पदार्थों के साथ अति सूक्ष्म पदार्थ भी हैं। हर पदार्थ में से सूक्ष्म अदृष्य प्रभाव या असर निकलते हैं। नेचर में सूक्ष्म असरों का बड़ा विशाल कारज जारी है। असरों द्वारा सारी नेचर का कारखाना वा ढांचा हर समय प्रभावित हो रहा है। असर उच्च भी हैं और नीच वा भयानक भी हैं। नीच असरों के साथ घिरकर मनुष्य नीच बन रहे हैं। उच्च असरों से घिरकर मनुष्य भले बनने के मार्ग पर पड़ जाते हैं। नेचर के भीतर असरों की एक अद्भुत लीला जारी है। असरों की यह अति विशाल और अद्भुत लीला मनुष्य को अकसर दिखाई नहीं देती और वह उसके अनुकूल जीवन व्यतीत नहीं करता। मनुष्य नहीं जानता कहां मेरी भलाई है और कहां मेरी तबाही है। बड़े बड़े आलम फाज़ल, अमीर वजीर, जरनैल, सूरमें और गुणवान अकसर इस पक्ष में अन्धेरे में रहकर जीवन व्यतीत करते हैं। वह अपने हानि हित का कोई सच्चा बोध और ज्ञान नहीं रखते। यह ज्ञान पाने के भी अकसर इच्छुक नहीं होते या बनते। अपने जीवन की गति क्या है, चाल क्या है, इस पक्ष में अन्धेरे में हैं। वह नहीं जानते कि वह पहले से

ईमानदार बन रहे हैं या बेईमान बन रहे हैं, वह पवित्र बन रहे हैं या अपवित्र बन रहे हैं, वह निंदक बन रहे हैं या गुणों के प्रशंसक। वह ईषा द्वेष परायण बन रहे हैं या उदार बन रहे हैं। वह दूसरों का माल, जान वा इज्ज़त के अपहरण कारी बन रहे हैं या दूसरों के माल, जान वा इज्ज़त के रक्षक बन रहे हैं। वह मांसाहारी बन रहे हैं या पशुओं के रक्षक वा उनके प्रति कृतज्ञ बन रहे हैं। वह माता पिता, भाई बहन, पति/पत्नी के प्रति कृतज्ञ वा सम्मान पूर्वक व्यवहार करने वाले बन रहे हैं या अपमान कारी बन रहे हैं। मनुष्य यह सोचने के विषय में पूर्ण अन्धकार में हैं। मनुष्य अपने आपको ठीक ही समझते हैं। अपने आपको जानने का इच्छुक भी नहीं होते वह अपनी हानि कर रहे हैं या नहीं, वह हानि क्या है? वह इस हानि को नहीं सोच सकते। इस विषय में वह अन्धकार में है।

मनुष्य को जो सुखकर लगता है, वह ठीक और अच्छा समझता है। वही जो उसके मन को भाता है। वह ठीक है या उसमें कोई फर्क है। हम सुख अनुरागी हैं। सुखों के अनुराग घोर अन्धेरा पैदा करते हैं। मनुष्य को उलझन में डालते हैं। उल्टी दृष्टि करते हैं और अक्ल मार देते हैं। भ्रान्ति का बड़ा शिकार बनाते हैं। सुख अनुरागी मनुष्य को सुखों के आकर्षण को चीर कर अपना हानि लाभ देख पाना असम्भव है। नीच सुख अनुराग न चाहकर भी उसकी हानि करते रहते हैं। इस सुखों की चाट अन्धेरा वा अपना नाश दिखने भी नहीं देता।

मनुष्य नहीं जानता कि मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या है? मेरे जन्म की सच्ची सफलता क्या है? मनुष्य का लक्ष्य सुखों की प्राप्ति ही बनकर रह जाता है। अक्ल समझ से अपना सत्य लक्ष्य समझकर वा जानकर भी मनुष्य सुखों की प्राप्ति के लिए मारा मारा फिरता है, कोई नशे सुख पर ही जीवन कुर्बान कर देता है। कोई विषय वासना की प्राप्ति के लिए तख़्त और ताज को हेच समझता है, कोई किसी अस्तित्व के मोह में ही बलिहार हो रहा है। मनुष्य को अकसर नहीं दिखाई देता कि केवल अपने लिए ही जीना अपना नाश करना है और पर हित के लिए मर मिटना ही सचमुच जीना है।

मनुष्य की मनोविज्ञानिक बनावट के लिए उक्त पक्षों के अन्धेरे को अपने आप देख सकना और उनसे बच पाना असम्भव है। इसलिए नेचर ने मनुष्य को सुखों के अनुरागों से पूर्ण मुक्त और निर्मल, परम पू० भगवान देवात्मा के अद्भुत ज्योति का पूर्ण रूप से मोहताज रखा है। उनकी शरण मनुष्य के लिए परम अवश्यक है, optional नहीं।

बलदेव सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

परलोक सत्य है

इन दिनों में परलोक के सम्बन्ध में दिन चल रहे हैं। परम पूजनीय भगवान ने सब यज्ञ साधनों को अधिक से अधिक हिन्दु त्यौहारों के साथ रखने की भरसक कोशिश की है।

अभी हमारी समाज में भी कई ऐसे जन हैं कि जो परलोक के विषय में सन्देह रखते हैं। परन्तु मेरा अटल विश्वास है कि परलोक शत-प्रतिशत सत्य है। उसके दो बड़े कारण हैं। एक तो परम पूजनीय भगवान देवात्मा जो सच्चाई के अनुरागी थे, वह थोड़े से भी सन्देह की बात की शिक्षा नहीं दे सकते थे। उनका साक्षात तजरबा था कि कैसे परलोक वासी एक मीडियम के द्वारा उन्हें परिचय देते थे और एक छोटी सी बालिका के द्वारा परलोक की सच्चाई को परलोक वासियों ने कैसे प्रगट किया।

दूसरी सच्चाई यह है कि विकासक्रम को हम झुठला नहीं सकते। विकास और विनाश की लीला हम हर रोज़ देखते हैं। जब विकास क्रम सत्य है, तो मरने से मनुष्य का मनुष्य के रूप में प्रगट होना कुदरती है। एक झटके में मनुष्य जीवन ख़त्म नहीं होता। जीवनी शक्ति हर हाल में जीना चाहती है, इसलिए जीवनी शक्ति को जीने के लिए शरीर की आवश्यकता है, इसलिए जो प्रतिदिन की चिन्ताओं और क्रियाओं के द्वारा हमारे शरीर में सूक्ष्म सैल अच्छे या बुरे बनते हैं, उनके अनुसार ही सूक्ष्य शरीर निर्मित होता है। यदि यह नियम न हो तो अच्छे और बुरे कर्मों में कोई अन्तर ही नहीं रह जाता। हमारे कर्मों का फल हमें इस रूप में ही प्राप्त होता है। मत भूलिए कि यदि हमने अपनी चिन्ताओं, क्रियाओं, झूठों, प्रपंचो के द्वारा किसी को मान्सिक, शारीरिक वा हार्दिक रूप से हानि पहुँचाई है, उनका फल नहीं मिलेगा? हमारी हर अच्छी बुरी चिन्ता वा क्रिया नेचर के नियमानुसार हमारे सूक्ष्म सैलों पर अंकित होती जाती है। हां, यह सत्य है कि जब नीच गतिया वा चिन्ताएं करते 2 हमारी जीवनी शक्ति इतनी कमज़ोर हो जाती है कि वह सूक्ष्म शरीर बनाने के योग्य नहीं रहती तो मनुष्य का अस्तित्व भी नष्ट हो जाता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सत्य शिक्षा के अनुसार हम जिस अंग से भी नीच गति वा नीच चिन्ता करते हैं, उन अंगों के सूक्ष्म सैल कमज़ोर पड़ जाते हैं और वह अंग परलोक में कमज़ोर बनते हैं। मनुष्य अपनी वासनाएं, उतेजनाएं, स्वार्थ, अहं, मान बड़ाई पाने के लिए षडयन्त्र, वह दुनिया से छुपा तो सकता है, परन्तु उसके नतीजे से बच नहीं सकता। यदि यह सच्चाई हमारे सामने रहे तो हमारे जीवन की गति बदल जाए, परन्तु हम मनुष्य सुख अनुरागी हैं, अपने सुखों की तृप्ति में हम शरीर को हानि पहुँचा लेते हैं, जीवनी शक्ति का तो गुरू महराज के बिना किसी ने ज्ञान ही नहीं दिया। परम पूजनीय भगवान ने फरमाया है :-

"अब यदि तुम्हें मृत्यु और परलोक तत्व विषयक ज्ञान प्राप्त हुआ हो, तो तुम अपने प्रिय सम्बन्धियों से उदासीन और बाग़ी नहीं हो सकते। तुम अपने आत्मा की गतियों से बेसुध नहीं रह सकते, अपने आत्मा को नीच गतियों से मोक्ष देने और उच्च गतियों में विकसित करने की ओर से बेपरवाह नहीं हो सकते। तुम में से जिस 2 जन ने इस सत्य ज्ञान की ज्योति पाकर अपने परलोकवासी सम्बन्धियों के सम्बन्ध में परलोक यज्ञ विषयक जहां तक किसी प्रकार का साधन किया है, वह वहां तक अपने आपको कृतार्थ अनुभव कर सकता है।"

यदि हम परलोक पर गूढ़ सम्बन्ध अनुभव नहीं करते, तो हम अपने उपकारी परलोकवासियों को कैसे याद करेंगे? उनके शुभ की कामना क्यों करेंगे? वह हमारी बहुत सी मुसीबतों में परलोक से भी सहायता करते हैं। हमारे सुख, दुख की सूक्ष्म लहरें उन तक पहुँचती हैं, और वह हर

सम्भव सहायता करने को तत्पर रहते हैं।

मेरे बेटे को परलोक का बहुत गहरा विश्वास है। जब वह अमरीका में गया, तो बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ा। निकटी रिश्तेदारों द्वारा बहुत बुरे व्यवहार मिले, यहां तक कि अमरीका से निकालने के लिए पूरे यत्न लगाए गए। पहले पहल जहां वह नौकरी करता था, वह लोग उसके काम से बहुत खुश थे। एक दिन सुबह जब वह अपने कमरे से निकला, तो अभी थोड़ी दूर ही गया था, कि उसे ख़्याल आया कि मैं डाक देख लूं। वापिस आकर जब उसने डाक देखी, तो उसमें उसका **Green Card** था, जो रिश्तेदारों की नियत को भांपते हुए उसने अलग से **Apply** किया था। उसे कुछ पता नहीं था कि उसके बास के पास किसी ने शिकायत की है, कि वह बिना किसी **American Documents** के काम रहा है। जब वह अपने काम पर पहुँचा, तो उसके बास ने बुलाया और कहा कि अमरीका में किसी के विरूद्ध बिना सबूत के ऐसा लांछन लगाना बहुत बुरा ख़्याल किया जाता है, परन्तु फिर भी यदि आप मुझे कोई **Document** दिखा दें कि आप **Legal** काम कर रहे हैं, तो मुझे बहुत खुशी होगी, बेटे ने अपना **Green Card** उन्हें दिखा दिया। इस सारी घटना को सुनाते हुए उसने जो कहा कि मामा माता जी ने परलोक से यह बात सुझाई कि तू मुड़ और अपना **Legal Document** लें। मुझे तो ख़्वाब में भी नहीं था कि मेरी ऐसी किसी ने मेरे बास के पास शिकायत की है। उसने यह भी कहा कि मुझे साफ फीलिंग होती है, कि जब मैं किसी कठिनाई में होता हूं, तो माता जी अर्थात उसके दादी जी श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी मेरी जैसे साक्षात सहायता करते हैं। मैं उसे अनुभव कर सकता हूं।

यह एक घटना है, हम सोच भी नहीं सकते कि हमारे हितकर्ता, हमारा शुभ चाहने वाले, हमारे दुखों में दुखी होने वाले परलोक वासी सम्बन्धी किन 2 हालातों में हमें सुझाव देते हैं, सहायता करते हैं। हम उनको याद रखें, उनकी सेवाओं को याद करें और उनका सदा आर्शीवाद पाएं। परलोक का विश्वास अन्ध विश्वास नहीं, अटल सच्चाई है। इस सच्चाई को झुठला कर हम नेचर के विकास क्रम को झुठलाते हैं।

-सुरजीत बराड़

आओ कुछ वायदा करें

परम पू० भगवान देवात्मा की शिक्षा हर पहलु में अद्वितीय है, विज्ञान मूलक शिक्षा देकर पू० भगवान ने धर्म के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति लाई है, जिससे हम एक ओर सब प्रकार के मिथ्या विश्वासों वा आडम्बरों से मुक्त हो गए हैं, दूसरी ओर सत्य धर्म की विज्ञान मूलक शिक्षा का वरदान हमें दिया है, जो हमारी असल हस्ती, हमारी जीवनी शक्ति अर्थात् हमारे आत्मा के स्वरूप, उसके बनने, बिगड़ने वा विकसित होने की सब धर्मों से भिन्न एक लसानी शिक्षा है।

इससे आगे एक ऐसा वरदान पू० भगवान की शिक्षा में निहित है जो हमारे आचार व्यवहार से सम्बन्धित है। पू० भगवान ने ही हमें सम्बन्ध तत्व की बिल्कुल निराली और अति अवश्यक शिक्षा देकर हमें सब सम्बन्धों में जीना सिखाया है। उन्होंने ने ही हमें फरमाया है कि हम चारों जगतों अर्थात भौतिक वा बेजान जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत पर निर्भर करते हैं, यह हमारे अटूट सम्बन्धी हैं।

पू० भगवान ने हिन्दु त्यौहारों के साथ हमारे सम्बन्धों के विषय में ब्रत के साधन जोड़ने का प्रयत्न किया है। आजकल भौतिक जगत के सम्बन्ध में दिन शुरू होने वाले हैं, दिवाली वाले दिन इसका ब्रत का विशेष साधन है। भौतिक जगत हमारा महान उपकारी जगत है। धरती का ठोस धरातल हमें चलने फिरने के योग्य बनाता है। सूर्य की रोशनी हमारे लिए कितनी अवश्यक है, हम इससे अन्दाजा लगा सकते हैं कि एक स्थान पर पानी में मछलियां रहती थी, परन्तु वहां सूर्य की रोशनी नहीं पहुंचती थी, तो वहां रहने वाली सारी मछलियां अन्धी थी। हमारे लिए रोशनी वा ताप के दाता सूर्य के हम सदा अभारी हैं, हम देख सकते हैं, तो इसकी रोशनी से, सर्दी में ठुठरने से बच सकते हैं तो सूर्य के ताप से। भौतिक सूर्य्य भौतिक हस्ती के जीवन दाता है। इससे आगे हवा और पानी बेजान वस्तुएं हैं परन्तु हमारे लिए प्राणाधार हैं। हवा के बिना तो हम एक मिन्ट भी मुश्किल से जिन्दा रह सकते हैं, पानी के बिना एक, दो दिन फिर पानी की कमी से शरीर में कई व्यवधान पैदा होने शुरू हो जाते हैं, यह दोनों हमारे परम अवश्यक सम्बन्धी हैं। हिन्दु जाति में सूर्य को नमस्कार करने की रीति है, परन्तु वह एक रसमी है, परन्तु, पू० भगवान ने इन बेजान वस्तुओं के लिए कृतज्ञ बनने की शिक्षा दी है उनके उपकारी रूप को देखें, उनको धन्यवाद दें, उनके आगे झुकें और उनके लिए प्रार्थी और सेवाकारी हों। मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था कि जब सुबह हम बिस्तरे से नीचे पैर रखते हैं, तो धरती को नमस्कार करो, यह ठोस धरती हमारी उपकारी है, उसे बार बार धन्यवाद दो। उस दिन से अकसर मैं सुबह सैर करते हुए चारों जगतों के आगे झुकती हूं कि जिनकी कृपा से मैं जीवित हूं, सुख से और प्राकृतिक जीवन बसर कर रही हूं। इससे बड़ा सकून मिलता है।

इससे आगे मकान (आश्रय स्थान) जिसमें हम सुख से, धूप छांव, बारिश से बचते हैं जो चारपाई, बिस्तरा जिस पर हम सोते हैं, कपड़े, जूते, पंखे, ए०सी०, फर्नीचर, किताबें जिनसे हमारा दिमाग रोशन हुआ है, उन्हें छापने वाली मशीने, कम्पूटर फोन, टी०वी०, रेडियो, हवाई जहाज कारें, मोटरें, गाड़ियां, गैस, बर्तन, क्या क्या गिनाएं इनकी गिणती इतनी अधिक है कि उन्हें याद करना भी कठिन है, यह पैन जिससे मैं लिख रही हूं यह भी बेजान जगत का ही हिस्सा है। इन सब वस्तुएं से हमारा जीवन सुखमय हुआ है, यह सब हमारी उपकारी हैं, अगर मनुष्य में कुछ भी कृतज्ञता का भाव हो तो उसका कृतज्ञता से सिर ही ऊपर नहीं उठ सकता।

अब हम इनके उपकारों को याद रखेंगे तो उनसे दुर्व्वहार नहीं करेंगे, हमारा घर गन्दा नहीं होगा, हमारे जूते गन्दे नहीं होंगे, हमारे घर का दूसरा समान गन्दा होकर हमें कोसेगा नहीं कि हमारा दुर्भाग्य है कि हम ऐसे उजड्ड के पल्ले पड़ गए।

आजकल दिवाली के अवसर पर रिवाज वश हम घरों की कुछ न कुछ सफाई करते हैं। परन्तु यह सफाई हमारा रोज़ का काम होना चाहिए। घर और उसकी सब वस्तुएं हमारी उपकारी हैं। यह सफाई भी तभी सम्भव है यदि हम घर का कुछ न प्रयोग करने वाला सामान निकालें। घरों में फालतु चीज़ों के स्टोर भरे रहते हैं जो चीजें सालों से इस्तेमाल नहीं होती, वह भी फैंकने का जिगरा नहीं पड़ता। एक भद्र स्त्री ने मुझे बताया कि मैंने कुछ फालतु सामान काफी मात्रा में घर से बाहर रखा कि किसी ज़रूरत मन्द को दे देंगे। मेरे पति बाहर गए पहले एक फूलदान उठाकर ले आए उसे साफ करके रख दिया फिर मैं बाहर गई तो कई काफी अच्छी चीजें देखी, वह मैंने फिर उठा ली, धीरे धीरे उसमें बहुत थोड़ा समान बाहर रह गया, बाकी कबाड़ फिर हमारे घर में वापिस आ गया, यह हाल उस जोड़े का

ही नहीं, घर घर का है और यह मानव प्रकृति है। हम नये बर्तन लेते हैं तो कुछ पुराने ज़रूरत मन्द को दे दो, आपने साल 5 - 7 सूट सिलवाए हैं तो 2 - 3 तो पहले वालों से निकालो, फिर एक और कंजूसी होती है कि हम ऐसे कपड़े किसी को देंगे जो या बिल्कुल बदरंग हो या 2 - 3 बार धुलने से ही फट जाऐं। ऐसी हालत में दो ताकि लेने वाला लेकर भी सम्मानित महसूस करे।

हमारे चाकू, चम्मच, हमारी टूटियां चमचमाती रहनी चाहिए, कई घरों में देखा है कि चाकू के हत्थे के पास पूरी मैल जमी होती है, जो हमारे भोजन में जाती है। किचन का सामान तो विशेष रूप से साफ सफाई वाला हो, उसका सम्बन्ध हमारे स्वास्थ्य से है।

हम अपना महमानों के लिए सोफे आदि रखेंगे जो साफ भी होते हैं तो हमारे बाथरूमों की हालत कुछ घरों में इतनी खस्ता होती है कि वहां पर जाना कठिन हो जाता है। वाशबेसिन की टूटीयां, वाशबेसन में कुरली करके वैसा ही छोड़ देना आम घरों में देखा जाता है। बाथरूम में गीले कपड़े पड़े रहना, किसी अच्छी sense रखने वाले के लिए असहनिय हो जाता है। गुरू महाराज की रोशनी के अनुसार जिसका घर और उसका कक्ष, जिसके कपड़े जूते और अन्य सम्बन्धित वस्तुए, खराब हैं, निश्चय उसका अपना जीवन भी खराब।

मुझे एक और घर में जाने का मौका मिला, तो मैंने देखा कि उनका घर काफी साफ सुथरा था, परन्तु जब उनके टायलट को इस्तेमाल किया तो देखा कि मग इतना गन्दा था कि उसको हाथ लगाने को दिल नहीं चाहता था। दोनो पति पत्नी कमाते थे, उनके लिए 10 - 15 रू० का मग लेना कोई मुश्किल नहीं था। परन्तु हम Toilet को **Neglect** करते हैं। दिन सब बराबर होते हैं, यह सफाई प्रतिदिन का काम है, केवल दिवाली के दिन ही क्यों? जो चीजें आप इस्तेमाल नहीं कर रहे वह शायद जरूरत मन्द के लिए रोज़ाना प्रयोग में आने वाली हो सकती हैं।

एक बार हम अपने घर को पेंट पालिश करवा रहे थे, पेंट के लिए बड़ी बाल्टी ही होती है जो पलास्टिक की होती है, अच्छी मजबूत होती है, वही बाज़ार में खाली 150 रू० की मिलती है। तो एक मजदूर बहुत ही प्रार्थना के साथ कहने लगा कि बीबी जी यह जो पेंट वाली बाल्टी खाली हुई हैं, उनमें से मुझे एक दे सकते हो, हमारे पास पानी भरने के लिए कोई बड़ा बर्तन नहीं, उसकी इस प्रार्थना से मेरा दिल हिल गया कि जो चीज़ हमने कबाड़िए को देनी थी, इसके लिए इतनी जरूरी है, मैंने उसी समय उसे दे दी, वह धन्य धन्य हो गया, हमारी समाजिक विषमता पर अफसोस भी हुआ कि जो मजदूर हमारा घर संवारते हैं, हमें घरों वाला बनाते हैं, उन्हें न रहने की सुविधा है और न और सहूलतें।

दालों के, चीनी के, चावलों के डब्बे हम बदल लेते हैं और कई बार पलास्टक कबाड़िए ले जाते हैं, जो आपको 50 पैसे दे देते हैं, परन्तु वही आप अपनी सफाई करने वाली, बर्तन साफ करने वाली, कूड़ा उठाने वाली को दे दें तो उसका घर सवंर जाता है।

आओ आज मिलकर यह वायदा करें कि हम अपने घर में न प्रयोग होने वाली वस्तुएं अच्छी हालत में किसी ज़रूरत मन्द को दे देंगे और नेचर का धन्यवाद करेंगे कि जिसने हमें इतनी हैसीयत दी है कि कम से कम हम किसी को कुछ दे सकते हैं। बर्तन देने वाले, पुराने कमड़े लेकर अब भी छोटे शहरों वा कसबों में आते होंगे, वह आप 10 - 20 कपड़े लेकर एक दो बर्तन दे देंगे, क्यों न वही कपड़े कोई पहने और आपका लालच कुछ घटे। त्याग और सेवा से जीवन बनता है, परन्तु हम पुरानी चीजों का भी त्याग न कर सकें तो हमारे गुरू की दी हुई अनमोल शिक्षा का क्या लाभ वा अर्थ?

सुरजीत बराड़

देव-दर की एक पुजारन

नेचर में विकास और विनाश का नियम सदा से काम कर रहा है। नेचर के विकास क्रम ने मानव समाज में शरोमणी हस्ती परम पूजनीय भगवान देवात्मा को प्रगट किया है, कि जो अद्भुत और अद्वितीय देव शक्तियां रखते हैं। वह सच्चाई और भलाई के आशिक हैं। और झूठ और मिथ्या के गारत करने वाले हैं। उन्होंने मानव जीवनों में सच्चाई और भलाई लाने के लिए अद्वितीय जीवन ब्रत धारण किया है। उनके जीवन की अलौकक सुन्दरता के प्रभाव, योग्य जनों को आकर्षित करके उनकी योग्यता के अनुसार सुन्दर रूप प्रदान कर रहे हैं। देवात्मा ने अपने देव प्रभावों के आश्चर्यजनक क़िश्में पैदा करके सुन्दर जीवनों की किसी समय अति सुन्दर फुलवाड़ी देव समाज के रूप में स्थापित की थी।

बहुत ही सन्मान के योग्य रायपुर रानी, जिला अम्बाला के हकीम सीता राम जी, जिनके मैंने कई वर्ष दर्शन किए हैं, देवात्मा के दर से बहुत प्रेम करते थे। उस समय पाकिस्तान बन गया और देव समाज लाहौर से मोगा में स्थापित हो गई। मोगे विकासालय चल पड़ा। 15 दिन विकासालय की सभाएं होती और 15 दिन विकासार्थी और कर्मचारी अपने 2 क्षेत्रों में प्रचार के लिए जाते। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का समय तो हमें देखने का सौभाग्य नहीं मिला, परन्तु इस समय की यादें मेरी बहुत बड़ी धरोहर हैं। पाकिस्तान से आकर विकासालय के प्रिंसीपल श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी थे। जो गुरू महाराज की शिक्षा के वास्तव पंडित थे। वह बड़े जोश से विकासालय चला रहे थे। उनके जाने के बाद श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी का सुनहरी जमाना आया, जब वह धर्म-विकासालय के प्रिंसीपल बने। हकीम सीता राम जी की बड़ी पोती बड़ी ही योगय थी और सुशील भी। वह **M.A.B.T.** पास थी। हकीम जी की इच्छा अनुसार वह विकासार्थी बन गई। विकासालय के सुन्दर वातावरण ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। वह सभाओं की बहुत बड़ी प्रशंसक थी। बीबी ज्ञानवती जी उनकी मासी थी। प्रेम जी के द्वारा उन्हें इस वातावरण का पता लगा। बीबी जी की प्रकृति बहुत धार्मिक थी। प्रेम जी की बातों से वह इस वातावरण की ओर आकर्षित हुई। प्रेम जी की दोनों छोटी बहनें अंगना जी और सरला जी भी नारी आश्रम में रहने लगी। यह सब अग्रवाल भद्र घराने से सम्बन्धित थी। सब सुन्दर शरीर और आत्मिक शक्तियां रखती थी।

बीबी ज्ञानवती जी आठवीं कलास पास कर चुकी थी। वह भी इस वातावरण में आने के लिए ललायत हो गई। वह अपने भाईयों की सहमति से खुशी खुशी विकासार्थी बन गई। भगवान देवात्मा का रूप सदा सदा के लिए उनके मन में अंकित हो गया और उन्होंने कभी भी इस लासानी दर से दूरी या बेवफ़ा होना स्वीकार नहीं किया।

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के खानदान में लड़कियों को मारने का बहुत बड़ा पाप हुआ था। वह स्त्री जाति की सेवा करके उसका परिशोध करना चाहते थे। स्त्री जाति की सेवा करने की उनके भीतर गहरी लगन थी। इसलिए उनकी छत्रछाया में विकासार्थी लड़कियों की कतार खड़ी हो गई। इस कतार में उक्त बीबी ज्ञानवती जी भी थी।

बीबी ज्ञानवती जी ने खुशी खुशी विकासालय का कोर्स पढ़ना शुरू कर दिया और देव धर्म मिशन की एक योग्य प्रचारका बनने के मार्ग पर पड़ गई। उन्होंने हिन्दी को पढ़ने और लिखने की योग्यता को बढ़ाना शुरू किया। बाजा बजाना सीखा, वह भजन गाती, पब्लिक में बोलने के योग्य बन गई। देव समाज के काम को पूरी तरह अपना लिया।

वह बड़ा सुनहरी ज़माना था, जब वर्षों के वर्ष लड़कियां प्रचार के लिए कर्मचारियों के साथ जाती थी। उस समय प्रचार के दौरे बहुत लम्बे होते थे। 15-20 दिन विकासालय से दूर रहती, वह लगभग सब क्षेत्रों में जाती थी।

समाज के दो ऋषि सन्मान के योग्य श्रीमान नौध सिंह जी और श्रीमान पंडित नेत राम जी उनके साथ जाते, जिससे लड़कियां सुरक्षित रहें। उस समय नारी आश्रम में रहने और विकासालय की सभाएं सुनने का उनका सुनहरी अवसर था।

वह एक खानदानी सुघड़, सुजान स्त्री थी। पुरुषार्थ ओर हिम्मत उनकी रग रग में था। वह सदा सुबह 4 बजे उठ जाती थी और अपना साधन भजन करके अपना दिल रस-मय रखती थी। फालतू बातों में समय गंवाना उनको अच्छा नहीं लगता था।

बहुत सफाई पसन्द थी। सफाई जैसे उनके भीतर कूट कूट कर भरी हुई थी। अपना आप, अपने वस्त्र, अपना निवास स्थान सेहन आदि को खूब साफ करती। फूहड़पन उनकी प्रकृति में ही नहीं था।

सामाजिक ग्रन्थों, विजय पताका, सब के लिए बहुत सत्कार और प्रेम रखती थी। उन्हें विशेष रूप से तरतीब और सम्मान से रखती थी।

पानी की उस समय खुली नालियां बाथरूमों के पास होती, उन्हें भी रगड़ रगड़ कर साफ करती, उनके सामने एक नुक्कर भी मैली नहीं रह सकती थी।

वह सच्ची प्रचारिका थी। आम स्त्रियों के साथ उनके भले की बात करती। जहां भी रही, उनकी सेवाओं द्वारा सब स्त्रियां उनका बहुत सम्मान करती थी।

वह बहुत पवित्र रहीं। जब उमर के बढ़ने से उन्हें ज़रूरत अनुभव हुई तो बड़ों वा संरक्षकों को शादी करवाने के लिए साफ मदद के लिए कहा। अपने विवाहित जीवन में भी बहुत पाक और वफादार रहीं। कोई उन पर बुरे असर पाने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

वह बहुत ईमानदार थी। जितना उनके लिए सम्भव होता, वह किसी की देनदार कहलाना पसन्द नहीं करती थी। वह उच्च गुणों से सुशोभित थी। उनके भीतर यह बड़ी खूबी थी कि वह शरीफ तबीयत रखती थी। उनको लड़ाई, झगड़ा, ताने मेहने मारना, किसी का अपमान करना, बुरा भला कहना बिल्कुल पसन्द नहीं था। वह अपमान के कौड़े घूंट भी चुपचाप पी जाती थी। बहुत शान्त स्वभाव रखती थी। उनमें सात्विकता थी, पर दुख, पर पीड़ा, पर हानि का गहरा बोध रखती थी।

वह बहुत दीन बनकर रहने का यत्न करती थी। नम्रता, दीनता उनके विशेष गुण थे।

वह उच्च जीवन की चौथी दौलत की मालिक थी। वह सन्मान, श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी, दया, हमदर्दी, रहमदिली रखती थी। परिशोध भाव भी उनके भीतर अच्छी मात्रा में था।

अपने से जीवन में बड़ों के लिए साधारण सम्मान के साथ उनके गुणों की सुन्दरता और महानता देखती थी और उनका माननीय जनों के आगे सदा दिल झुकता था, गुणों पर मन्त्रमुगध हो जाती थी। उनकी महानता और उच्चता का ब्यान भी करती, जितनी उनकी योग्यता थी, उनके पद चिन्हों पर चलने का यत्न करती थी। उच्च जीवन-धारियों को, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसी हस्तियों को ईद के चांद की तरह देखती।

वह अपने श्रद्धेय माता, पिता के लिए बहुत शुक्रगुज़ार हृदय रखती थी। उनके जन्मदाता, पालनकर्ता और शिक्षा दाता रूप को निहारती, देखती और झुकती थी। श्रद्धेय माता जी की फोटो सदा अपनी साधन सामग्री में रखती थी। उनके नेक नाम को लीक लगाने से बहुत गरेज़ करती थी।

वह श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और मेरे प्रति बहुत सम्मान रखती थी। हम उनसे सम्बन्धित समाज के मैंबर नहीं थे, तो भी हमारे लिए सम्मान रखती थी, अपना दुख सुख बताने में उन्हें कोई झिझक नहीं थी। ज़रूरत पड़ने पर बुला भी लेती थी। हमारे प्रति नम्रता, दीनता और सम्मान भरे व्यवहारों का प्रदर्शन रखती थी। कृतज्ञता एक कीमती जेवर है, जो अपनी कमी के कारण ही जाना जाता है।

वह साधारण रहम दिल और तरसवान हृदय रखती थी। पक्की शाकाहारी थी। पशु पक्षियों की सेवा करती थी। हमदर्द होना एक बहुत सुन्दर गुण है।

वह अपने पति का बहुत सम्मान करती थी, इसलिए भी कि उन्होंने उनके समाज के काम में कभी बाधा नहीं डाली।

गुरू महाराज की कृपा से साथी कर्मचारियों के साथ भी उनका सम्बन्ध बहुत अच्छा था। उनके जीवन में और बहुत से सुन्दर गुण थे, परन्तु अफसोस कि हालात ऐसे बने कि उनकी मृतक देह को जो सम्मान पूर्वक विदा करना था, वह बिल्कुल न हो सका।

मैं तुच्छ एक साथी कर्मचारी और प्रचारक हृदय की व्याकुलता से निकली तुच्छ, परन्तु सच्ची श्रद्धांजली भेंट करता हूं। उनकी परलोक में रक्षा हो। उनके माता पिता वा धर्म सम्बन्धी उनकी हर सम्भव रक्षा करें। इस लोक सम्बन्धी बन्धनों से जल्दी से जल्दी वह मुक्त हों। उन्हें उच्च लोक प्राप्त हो। उनकी गति उच्च हो, उनकी मति उच्च हो और अपने आत्मिक विकास के कार्य में लगी रहें।

उनके आत्मा को जल्दी से जल्दी धैर्य प्राप्त हो, उनके हृदय को सच्ची शान्ति प्राप्त हो, शान्ति प्राप्त हो, शान्ति प्राप्त हो, उनका सदा शुभ हो। मेरी तुच्छ की यही उनके लिए कामना है।

उनका एक साथी कर्मचारी
- बलदेव सिंह

देव समाज के वृक्ष का एक और सुशक्त पत्ता झड़ गया

मेरे बहुत सन्मान के योग्य बहन ज्ञानवती जी,

आपके दुःखप्रद देहान्त ने जैसे हिला दिया। आपका मेरे साथ सम्बन्ध सन 1950 - 55 से शुरू हुआ था। आप आई तो विकासालय में अपने भाईयों की रज़ामन्दी से थी, परन्तु जब आपने विकासालय में जाने से इन्कार कर दिया तो आपके भाईयों ने बहुत विरोधता की। वह अपनी मर्ज़ी से आपकी शादी करना चाहते थे और जवान लड़की की शादी न हो यह पुरातन विचारों और देहात जैसे स्थान पर रहने वालों के लिए असहनीय था। परन्तु आपके ऊपर भगवान देवात्मा के देव प्रभाव दायक मण्डल में ही रहने की जिद थी, क्योंकि उस समय आपको अपना भला विकासालय के वातावरण में ही नज़र आता था। मैं भी नारी आश्रम में आपके साथ 2 - 3 वर्ष रही हूं, आप हमेशा हम सबके लिए कई पहलुओं में बहुत प्रेरणादायक रही हैं। आपका सुबह 4 बजे उठना और नियमित रूप से साधन करना सबको बहुत प्रेरणा देता था। आप सिर्फ पुस्तकों के पाठ, विचार, साधन में ही समय बिताती थी। इधर उधर की गप्पें मारना तो उन्हें कतई पसन्द नहीं था। इतनी सादा थी कि अपनी चन्द साड़ीयां रखती थी, परन्तु उन्हें बहुत साफ और सुन्दर ढंग से रखती थी, झगड़ा करना तो उनकी फितरत में ही नहीं था। अपने किसी साथी से बुरे और कड़वे बोल सुनकर भी चुप रहती और अधिक से अधिक रो देती थी। उनके चेहरे से बहुत सात्विक असर पड़ते थे। सफाई की तो उनकी कोई सीमा नहीं थी, परन्तु आख़िरी समय तक जो उन्हें उनकी सफाई के बोध के विरूद्ध सहना पड़ा होगा, वह किसी के भी अन्दाजे से बाहर है। हमारे परिवार के साथ विशेष सम्बन्ध था। मेरे बच्चों को बहुत प्यार करती थी। किसी प्रकार की चापलूसी करना उनकी फितरत में ही नहीं था। बहुत सहनशील थी। लेकिन कई बातों को ग़लत जानकर भी उसके विरूद्ध बोलने की हिम्मत कम थी।

भटिंडा में शादी के बाद मन्दिर में रहने लगी तो कभी उस पर अपना अधिकार नहीं जताया। काफी बूढ़ी उमर तक मन्दिर में सफाई करना, झाड़ू लगाना अपना सौभाग्य समझती थी। मन्दिर की जैसे पूजा करती थी।

उनकी शक्ल सूरत संवारने, रिपेयर आदि का काम भी स्वयं करवाती थी।

सेवकों के साथ उनका सम्बन्ध बहुत गहरा था। भटिंडा के ही नहीं गोनियाना वा निकट के स्थानों के सेवक भी आकर अकसर उनकी सभाएं सुनत थे। उनके साथ उनका आत्मिक भले को लेकर सम्बन्ध था। वह कभी किसी से कुछ भी लेने के हक़ में नहीं थी। कर्मचारियों की प्रतिज्ञा कि किसी और से उपहार आदि न लें उसमें पूरी तरह दृढ़ थी। उनके इरादे से उन्हें कोई लालच गिरा नहीं सकता था।

उनकी वह भोली भाली, सादी साड़ी में लिपटी सूरत सामने आकर, उनके आगे सिर झुकता है। काश! कि हम उनको वह सन्मान दे सकते जिसकी वह अधिकारी थी। हम उनके गुणों, उनकी श्रद्धा, गुरू के दर के लिए कृतज्ञता को सामने लाकर नमन करते हैं। उनके बहुत सारे उपकृत हैं, उन्हें कम से कम अपने शब्दों द्वारा तो श्रद्धांजल देनी चाहिए, हमारी यह ज़िम्मेवारी है। उनका देहान्त जिन हालतों में हुआ, जिससे उनकी पवित्र देह का जो सम्मान होना चाहिए था, अफसोस कि उनके अपने पारिवारिक जनों के द्वारा ही नहीं हुआ समाजिक जनों के लिए तो उन्होंने सम्भव ही नहीं रखा। सब के दिल में इस बात का बहुत गहरा दुख है।

उनकी एक साथी सेवक

- सुरजीत बराड़

श्रीमती पूजनीया जी की सेवाओं और सद्गुणों आदि के संबंध में श्रीमान् पंडित संतराम जी का एक अति हितकर लेख।

मेरी बहुत बहुत उपकारी और हितकारी, मेरा सब प्रकार से हित चाहने और करने वाली, निहायत कोमल, नम्र, मीठा और मधुर स्वभाव रखने वाली, अपने जीवन के विचार से निहायत ही पवित्र और शुद्ध, गहरी श्रद्धा और कृतज्ञता की पात्र श्रीमती माता पूजनीया जी!

तीस बत्तीस वर्ष तक आप के श्री चरणों में रहकर मैंने जो उपकार पाए हैं, जब उन उपकारों की सुंदर छवि मेरे सम्मुख आती है तब मेरा तुच्छ आत्मा इतना नम्र और दीन बन जाता है, कि आप के श्री चरणों से सिर उठाने को जी नहीं चाहता।

इस लंबे काल में आप के चरणों में रहकर मैंने जो कुछ आप के हितकर रूप को देखा है, शोक कि उस को लिखने के लिए मैं अपने दिल और दिमाग़ के विचार से निहायत ही अयोग्य हूं।

आप अपने पूजनीय पति भगवान देवात्मा की सच्ची सती धर्म पत्नी थीं। किसी ग़ैर पुरुष के साथ छूना आप को बहुत ही नापसंद था। जहां कहीं भीड़ होती वहां जाने से आप इस लिए बहुत घबराती थीं कि कहीं आप किसी और पुरुष के साथ छू न जाएं। यहां तक कि बीमारी के दिनों में जब आप बहुत कमज़ोर हो गईं, अपने आप हिलजुल नहीं सकतीं थीं और हम लोग आप की मदद करते, तब आप को बहुत ही दिक़्कत में से गुज़रना पड़ता था। लाचारी से सब कुछ सहना पड़ता था।

आप अपने पूज्य पति भगवान देवात्मा की आज्ञाओं को मुख्य और सब कुछ गौण जानती थीं। यहां तक कि जब आप के पति भगवान देवात्मा का देहांत हो गया, तब आप के दो बच्चों ने अचानक आकर उनकी जायदाद पर जबरन नाजायज़ क़ब्ज़ा करना चाहा, समाज के लोगों ने उन को रोक दिया। तब उस समय उन बच्चों ने यह चाहा कि वह आप से मिलकर बातचीत करें, परंतु आप ने

दुखी दिल के साथ ज़ोरदार शब्दों में यह कहा, कि मैं उन बच्चों को किसी सूरत में नहीं मिल सकती, क्योंकि मुझे पूजनीय पति जी की आज्ञा है, कि तुम ने बाग़ी बच्चों को देवालय में कभी नहीं मिलना; इसलिए मैं उन को मिलना नहीं चाहती। माता जी! मुझे इस समय सीता जी की याद आ रही है। उन्होंने रामायण के कथन अनुसार रावण के कहने पर अपने पति की आज्ञा तोड़ दी, जिस से रामचंद्र जी को बहुत मुसीबत उठानी पड़ी। परंतु माता जी! आप ने पूजनीय पति जी की आज्ञा कभी नहीं तोड़ी। आप के बच्चे बाहर खड़े हैं, वह आप को मिलने के लिए कहते हैं, मगर आप ज़रा नही डोलतीं और अपने पति जी की आज्ञा पर दृढ़ हैं।

हे धर्म बल से पूर्ण और मोह बंधन से सर्वथा मुक्त माता! आप के इस सुंदर रूप को कौन देख सकता है। हां, कोई देखे न देखे, आप अवश्य अपने धर्म पति जी की आज्ञाओं के लिए हिमालय पर्वत की न्याईं स्थिर और सच्ची रही हैं।

आप देखने में बहुत नम्र, मीठे, सरल स्वभाव वाली होकर भी अपने शुभ इरादों में लोहे की जंजीरों से भी सख़्त थीं। लोहे की जंजीर कुछ झटकों से टूट भी जाती है, मगर आप के शुभ इरादों की जंजीर सख़्त से सख़्त झटकों से भी नहीं टूटती थी। बल्कि जितने झटके अधिक लगते थे, उतनी ही मज़बूत होती थी। देवात्मा के देव प्रभावों को लाभ करके आप ने अपने आत्मा को बहुत बलवान और तेजस्वी बना लिया था। जब आप के बाग़ी बच्चे यह पेश करते और कहते, कि अम्मां तुम हमारे पास आ जाओ, तब आप यही कहतीं कि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊंगी, उन्हीं के पास रहूंगी। तुम को छोड़ सकती हूं परंतु अपने पति जी को नहीं छोड़ सकती। मैंने जिन को अपनी बांह पकड़ाई है उन से बाग़ी नहीं हो सकती, मेरे लिए वह पहले हैं और तुम पीछे हो।

माता जी! आप ने अपने बच्चों का ही त्याग नहीं किया, बल्कि सुख आराम का भी त्याग किया है। एक बार पूजनीय भगवान ने खुद सभा में बतलाया था, कि रात को बीमारी की हालत में मेरे पास केवल पत्नी ही होती हैं। तुम में से कोई नहीं होता। अंतिम बीमारी में भगवान देवात्मा जितने खुश माता पूजनीया जी से गए हैं, उतने और किसी से नहीं गए। वह सब अपनी सेवा उन्हीं से ही लेना चाहते थे। कहते थे हमारी सब सेवा यही करेंगी। एक बार लेटे हुए भगवान देवात्मा को सख़्त तकलीफ़ हो गई। माता पूजनीया जी को जब पता लगा तब ऐसे ज़ोर से उठीं, कि उन को अपनी कुछ सुध न रही और धड़ाम से नीचे गिर पड़ीं। कुछ देर के बाद जब मैं आया तब पूजनीय भगवान ने भरे दिल से मुझ से कहा अरे तुम कहां फिरते हो, यह बिचारी हमारी ख़ातिर गिर पड़ीं। इन्हें अपनी सुध नहीं रही। मगर माता जी उसी प्रकार आस्तीन चढ़ाए हुए सेवा के लिए तत्पर खड़ी हो गईं। यह माता जी का रूप किसको दिखाई देता है, जिस के भीतर खुद सेवा का कोई भाव न हो। भगवान देवात्मा की सब प्रकार से सेवा करके बहुत धन्य धन्य और प्रसन्न रहती थीं। पूजनीय भगवान जब कभी उन से ख़फा होते तब कहा करती थीं, कि मुझे इस बात का बहुत डर रहता है, कि मेरे पूजनीय पति कहीं यह न कह दें, कि तुम ने अब हमारी सेवा न करना। मुझ से यह बात नहीं बर्दाश्त हो सकती, मैं उन की सेवा किए बिना जी नहीं सकती। उनकी सेवा में ही मेरे जान प्राण हैं। कहां साधारण स्त्रियां पति के कुछ कहने पर रूठ जाती हैं। पति के लिए कुछ नहीं करना चाहतीं; कहां माता पूजनीया जी जो पति की सेवा में ही जान प्राण महसूस करती थीं।

माता पूजनीया जी के कुछ और सद्गुण।

(1) माता पूजनीया जी ग़रीबों, दुखियों, असहायों के लिए दया की एक ख़ास मूर्ति थीं। वह जहां कहीं किसी दुखिया को देखतीं, वहीं उस के लिए कुछ न कुछ करने को मज़बूर हो जातीं। उनकी ऐसी बीसियों घटनाएं हैं। एक ग़रीब ब्राह्मण बाल बच्चेदार था। उसके पास रहने के लिए कोई मकान न था। माता पूजनीया जी

ने कई सौ रुपया देकर उसके गांव में एक मकान बनवा दिया। इसी प्रकार एक और जन की लड़की की शादी थी, उसको भी रुपए दिए। इस प्रकार की और भी कितनी ही घटनाएं हैं। वह ग़रीबों को कपड़े और खाने की चीज़ें तो अक्सर देती रहती थीं। वह कई बार खुद दूध न पीतीं और उस की खीर बनाकर ग़रीबों को खिलाती थीं। वह जब बाहर जातीं तब ग़रीबों को पैसे देती जातीं। एक दिन उनको यह ख़याल गुज़रा कि पैसों का यह लोग तम्बाकू सिग्रेट आदि न पीते हों, तब से उन्होंने पैसे देने बन्द कर दिए। फिर जब वह सैर को बाहर जातीं तब खाने की चीज़ें साथ ले जातीं और वह ग़रीबों को बांटती जातीं। कइयों को खाना खिलातीं, कइयों को दूध पिलातीं, कइयों को मौसमी फल खिलातीं। आटा, खरबूज़े आदि कई बार ग़रीबों के घरों में भिजवातीं। उनके सम्मुख हिन्दू मुसलमान का कोई ख़याल न था। ग़रीब हो चाहे कोई हो वह उसकी सहायता करती थीं। वह अपनी आवश्यकताओं के लिए भी बहुत कम ख़र्च करके और इस प्रकार बचत करके ग़रीबों को दान देने का यत्न करती थीं। उनका ग़रीबों के लिए दान का भाव इस क़दर प्रबल था, कि उनके पास जो कुछ रुपया पैसा, असबाब आदि था, वह सब का सब दान में ही दे दिया। मोह के बस होकर अपनी किसी संतान् को कुछ नहीं दिया। कैसा अद्भुत दृष्टांत!

(2) माता पूजनीया जी बड़ी साधन शील थीं। वह प्रात:काल चार बजे उठकर अपना साधन करती थीं। जब तक उन के शरीर ने साथ दिया तब तक उन्होंने अपना साधन भजन कभी नहीं छोड़ा। जब उन की आंखों में मोतिया उतर आया और खुद लिख पढ़ नहीं सकती थीं, तब पूजनीय भगवान के लेखों का दूसरों से पाठ सुनती थीं। उच्च संगत और उच्च लेखों की बहुत प्यासी थीं। जहां कहीं समाज का कोई नया भजन सुनतीं, उसे अपनी कापी में लिखवा लेती थीं। वह साधन सभाओं में सब से पहले जातीं और सबसे पीछे आती थीं। उन्हें सभाओं के बीच में देरी से आना वा बीच में से उठ जाना बहुत नापसंद था। यदि कोई दूसरा भी सभाओं में समय पर न आता, तो उस से उन्हें बहुत तकलीफ़ होती थी। सभा में आंखें मींचना या सोना उनको बहुत बुरा लगता था। वह साधन को पूरी तवज्जो से सुनती थीं। साधन में बैठकर इधर उधर की कोई बातचीत न करती थीं। यदि और कोई ऐसा करे, तो उस को भी रोकती थीं। साधन कराने वाले की तरफ़ बराबर ध्यान रखती थीं। इधर उधर नहीं देखती थीं।

(3) माता पूजनीया जी बहुत ही सादा भोजन खातीं और सादा ही वस्त्र पहनती थीं। केवल एक दाल भाजी से ही खाना खाकर खुश रहती थीं। बहुत सी चीज़ें खाना पसंद न करती थीं।

(4) वह सत्यवादी और सरल थीं। जो कुछ बात कहतीं, वह सदा सत्य और सरलता से कहती थीं, लाग लपेट वा हेर फेर कर कुछ न कहती थीं।

(5) माता पूजनीया जी अपने पति की पहली संतान् को अपनी पेट जाई संतान् से भी अधिक प्यार करती थीं। वह अपनी सब संतान् की आत्मिक भलाई के लिए बहुत व्याकुल रहती थीं। अपनी सब संतान् को समाज के साथ और पूजनीय भगवान के साथ जोड़ने के लिए बहुत संग्राम और यत्न करती थीं। जब उनके पतिजी के बड़े बेटे श्रीमान् पंडित हरनारायण जी की मृत्यु हुई, तब उन्होंने अपनी विधवा दुखिया बहू के साथ अन्य हमदर्दी के भिन्न उन्हें एक हज़ार से भी ऊपर की सहायता देकर उनके दुखिया हृदय को धैर्य दी। सदा ही वह इस बहू और उनके बच्चों के साथ हमदर्दी का भाव रखकर उनकी एक वा दूसरी सेवा करती रहती थीं। जैसा अच्छा बर्ताव यह अपनी बहुओं से करती थीं वैसा बर्ताव शायद ही कोई सास करती होगी।

(6) वह अपने बच्चों के भिन्न अन्य बच्चों को भी बहुत प्यार करती थीं। किसी का भी बच्चा हो उसे प्यार करने लग जाती थीं। उन्हें खाने पीने की चीज़ें

देकर बहुत प्रसन्न होती थीं। औरों के बच्चों का मुंह हाथ धोकर उन्हें साफ़ सुथरा बना देती थीं। छोटी लड़कियों की कंघी आदि कर देती थीं।

(7) माता पूजनीया जी के भीतर अनपढ़ स्त्रियों, लड़कियों और लड़कों को पढ़ाने, और उन्हें विद्या दान देने का बहुत ही प्रबल भाव था। जब तक उनके शरीर ने साथ दिया तब तक उन्होंने कई वर्ष तक आप बच्चों और स्त्रियों को पढ़ाने का काम किया। दोपहर के बाद जहां बहुत सी स्त्रियां रहती थीं, वहां जाकर कई कई घंटे उन्हें पढ़ाने का काम करती थीं। उनके साथ हितकर बातचीत भी करतीं। उन के आपस के झगड़े आदि दूर करके आपस में मेल करातीं। कइयों को अपने पास से ही पढ़ने के लिए पुस्तकें मुफ्त देतीं। उनके बच्चों को अपनी गोद में ले लेतीं। उनके बच्चों को देने के लिए खाने की चीज़ें अपने साथ ले जाती थीं। उन्होंने कई एक कपड़े की थैलियां बनाकर रखी हुई थीं। किसी में कुछ और किसी में कुछ अलग अलग खाने की वस्तुएं रखी रहती थीं। जैसे माताएं अपने बच्चों को वस्तुएं देकर प्रसन्न होती हैं, वैसे ही वह दूसरों के बच्चों को देकर खुश होती थीं। खुद खाना पसंद न करती थीं, दूसरों को खिलाकर प्रसन्न होती थीं।

(8) पशुओं के लिए भी उनके भीतर बहुत हमदर्दी और दया का भाव था। पक्षियों के पीने के लिए अपने हाथों से पानी के बर्तन भरकर रखा करती थीं। पक्षियों के खाने के लिए दाने या रोटी आदि देती थीं। जहां कहीं कोई दुखी पशु इनको मिलता तब झट कहतीं इसे खाने पीने के लिए कुछ दो।

(9) माता पूजनीया जी के भीतर अपने पति भगवान देवात्मा के मिशन में सेवाकारी बनने का बहुत ही प्रबल भाव था। वह वृद्ध और रोगी होकर भी लाहौर में और लाहौर से बाहर और शहरों में भी देव समाज के लिए दान मांगने का काम करती थीं। बाज़ दफ़ा सुबह से लेकर रात के दस दस बजे तक दान मांगती थीं। अब जब कि उनका शरीर साथ नहीं देता था, तब भी कहा करती थीं कि मुझे गाड़ी में बिठाकर दान के लिए ले जाया करो। दान मांगते समय किसी किसी जन की तरफ़ से उनका अपमान भी होता, कोई कुछ कहता कोई कुछ, परंतु वह अपने मान अपमान की कुछ परवाह न करतीं। दान मांगकर बहुत प्रसन्न होती थीं, और अपने साथ दान मांगने वालों को भी उत्साह देती थीं।

(10) वह केवल औरों से दान मांगकर ही प्रसन्न नहीं होती थीं, बल्कि अपने पास से दान देकर बहुत तृप्ति अनुभव करती थीं। देव समाज की सब प्रकार की भलाई और उन्नति के लिए सदा व्याकुल रहती थीं। काम करने वालों का आपस में कहीं मतभेद या कुछ अनमेल होता, तब बहुत ही दुखी होती थीं। भगवान देवात्मा के कार्य में काम आने वालों का ख़ास सम्मान् और इज्ज़त करती थीं। एक बार उनके एक बेटे ने कहा, कि अम्मां हमारा साथ नहीं देतीं, समाज वालों का साथ देती हैं। तब उन्होंने कहा, मैंने तो जो लोग मेरे पति का कार्य करते हैं उनका ही साथ देना है, तुम लोगों का साथ नहीं देना है; मैंने अपने पति भगवान देवात्मा के लिए सच्ची रहना है, और जो उनके कार्य में लगे हुए हैं वही मेरे हैं; मैं दो जगह अपना पांव नहीं रख सकती, तुम लोगों का साथ भी दूं और इन लोगों का भी; बस मैंने अब यह फ़ैसला कर लिया है, कि मैंने पूजनीय भगवान का काम करने वालों का ही साथ देना है।

(11) पूजनीय भगवान और उनका कार्य करने वालों की निंदा सुनने में वह बहुत कष्ट बोध करती थीं। या तो निंदा करने वालों को मुंह तोड़ जवाब देती थीं, या उन से मिलना जुलना पसंद न करती थीं। उन्होंने एक बार अपनी एक संबंधी स्त्री से कहा था, कि देखो तुम्हारा मेरा संबंध तब तक ही चल सकता है, जब तक तुम पूजनीय भगवान और उनके कार्य में काम आने वालों के संबंध में कोई झूठी निंदा मूलक बातचीत न करोगी, जब कभी मुझे इस प्रकार का कुछ इशारा भी मालूम हुआ, तभी हमारा

तुम्हारा संबंध टूट जायगा। वाह! कितनी बहादुरी और दिलेरी!! सचमुच माता जी के भीतर भगवान देवात्मा का देवबल संचार हो चुका था।

(12) माता पूजनीया जी ने जितना मुझे प्यार और आदर किया है, उतना मेरी जन्म दाता माता ने भी नहीं किया। मेरी जन्म दाता माता केवल मेरे शरीर को ही प्यार करती थीं। माता पूजनीया जी मेरे आत्मा का भी हित चाहती और उसकी हानि और लाभ को महसूस करती थीं। मेरे भीतर के बुरे और हानिकारक भावों को हटाने और हितकर उच्च भावों को पैदा करने का यत्न और संग्राम करती थीं। मेरे साथ माता पूजनीया जी का सगे बेटों से भी बढ़कर हितकर संबंध था।

(13) माता पूजनीया जी के भीतर भगवान् देवात्मा के वंशगत संबंधियों के प्रति स्नेह और सम्मान् का भाव भी प्रबल रूप से वर्तमान था। जब कभी अकबरपुर से भगवान देवात्मा का कोई संबंधी आता, तब उनके साथ बहुत स्नेह और सम्मान् के साथ पेश आतीं। उनकी बहुत चाव भाव से सेवा टहल करतीं। उनकी सब प्रकार की ज़रूरतों का बहुत ख़याल रखतीं। अपने बुज़ुर्ग चाचा जी के प्रति भी उनके अंदर बहुत सम्मान् का भाव था। जब कभी वह उन्हें मिलते तब बहुत झुक कर हाथ जोड़कर, सिर नवा करके प्रणाम करतीं। उन के मैले कपड़े अपने हाथों से धोतीं, उनकी सब प्रकार की ज़रूरतों का ख़याल रखतीं, और उनके प्रति कृतज्ञ भाव से भरी रहतीं। जब उन्हें आता देखतीं, तब झट खड़ी होकर सम्मान् देतीं। अपने सब संबंधियों के साथ भी उनका बहुत हितकर लगाव और बर्ताव था। हर एक संबंधी के साथ ही बहुत चाव भाव से मिला करती थीं।

(14) जब कि वह इस अंतिम बीमारी में सख़्त तकलीफ़ में थीं, तब मुझे कहतीं कि जो रुपया मैंने दान किया हुआ है, उस में से एक कौड़ी भी खर्च नहीं करना, चाहे मेरा इलाज हो चाहे न हो। जो मैं दान कर चुकी हूं, उस में से ख़र्च करना मेरा इख़्त्यार नहीं है, वह औरों के निमित्त हो चुका है। मुझ से पूछती रहती थीं, कि मेरा रुपया अभी तुम्हारे पास खर्च के लिए कितना बाक़ी है। मैं कहता, माता जी कुछ फ़िकर न करो, मेरे पास बाक़ी हैं, आपके दान में से एक कौड़ी ख़र्च नहीं होगी। समाज की तरफ़ से उनकी बीमारी के ख़र्च के लिए रुपए पेश किए गए परंतु वह उन्होंने सब के सब वापिस समाज में भेज दिए और कहा, कि मेरे मरने पर जो ख़र्च हो, वह सब का सब मेरे हिसाब में से हो, समाज से एक पैसा भी ख़र्च न हो। माता जी लेने में खुशी नहीं मालूम करती थीं, देने में खुशी मालूम करती थीं।

(15) माता पूजनीया जी दूसरों का इस क़दर ख़याल रखती थीं, कि अपनी जूठी कोई वस्तु औरों को इसलिए देना नहीं चाहती थीं, कि किसी दूसरे को मेरी बीमारी न लग जाय और जैसे मैं तकलीफ़ पा रही हूं, वैसे कोई और तकलीफ़ न पावे। इसलिए वह बार बार ख़बरदार करती रहती थीं, कि देखना मेरा जूठा किसी को न देना।

(16) माता पूजनीया जी के भीतर सफ़ाई और तरतीब का भाव भी बहुत प्रबल था। उनके पास वर्षों की पुस्तकें पड़ी हैं परंतु क्या मज़ाल किसी को दाग़ भी लगा हो। वह बहुत सुंदर हालत में अच्छे अच्छे कपड़ों के बस्तों में बांधकर रखी हुई हैं। उन्हें धर्म पुस्तकों को लब या थूक लगाना बहुत ही नागवार था। कितने ही स्त्री पुरुषों को ऐसा करते देखकर वह बहुत तकलीफ़ मालूम करती थीं, अपनी पुस्तकों को बहुत श्रद्धा और सम्मान् से रखती थीं, मैले वा जूठे हाथों से कभी न खुद उठातीं और न किसी को उठाने देती थीं, यहां तक कि समाज के जो अख़बार उनके पास आते उन्हें भी बहुत सम्मान् और इज़्ज़त से रखतीं, इधर उधर कभी न फैंकतीं। वह सब सिलसिले वार लगातीं, और उनकी जिल्दें बंधवाकर

रखती थीं।

(17) माता पूजनीया जी अपने धर्म पति जी को परम पूजनीय सच्चे देवता के रूप में देखती थीं। उनके संबंध में गाढ़ श्रद्धा और कृतज्ञता और सहानुभूति का ज़ोरदार भाव रखती थीं। जब सम्मिलित साधनों में शामिल होतीं और वहां पर देव स्तोत्र और देव आरती का गान होता, तब आप हाथ जोड़कर खड़ी रहतीं और बार बार सिर झुकाकर प्रणाम करतीं। जब कभी वह ख़ुद साधन सभा करतीं, तब पूजनीय भगवान के दुखों और तकलीफ़ों को महसूस करके कई बार रोने लग जाती थीं। वह यह भजन अक्सर गाया करती थीं,

"घोर से घोर उठाए दुखड़े,
तो भी कीना पर कल्याण।"

इस को गाते समय ज़ार ज़ार रोने लग जातीं और कहतीं, कि हम लोगों के लिए भगवान देवात्मा ने किस क़दर दुख और कष्ट उठाए हैं। उनके उपकारी रूप को सम्मुख लाकर कृतज्ञता के भाव से भरकर पूजनीय भगवान को बार बार धन्यवाद देती तृप्त नहीं होती थीं। वह फ़रमाती थीं, कि भगवान देवात्मा मेरे लिए सब कुछ कर गए, मुझे किसी की मुहताज नहीं छोड़ गए, उनकी बहुत ही कृपा है। कितनी ही बार पूजनीय भगवान के संबंध में अपनी कमियों और अवज्ञाओं को याद करके बहुत दुखी होती थीं, कि हाय मैंने भगवान देवात्मा की पूरी क़दर नहीं की। वह कहा करती थीं, कि पूजनीय भगवान का यह कहना बिलकुल ठीक था। कि हमारी क़ीमत और क़दर तुम को पीछे मालूम होगी। शोक! मैंने जीते जी उन की जितनी क़दर करनी चाहिए थी, उतनी क़दर नहीं की। अब उन की संगत मुझे पता नहीं कब मिलेगी, मरकर परलोक में जाकर भी उनके चरणों में पहुंचने का अधिकार प्राप्त होगा या नहीं? इस बात से बहुत डरती रहती थीं, कि कदाचित भगवान देवात्मा की कोई आज्ञा मुझ से भंग न हो जाए। इसलिए वह पूजनीय भगवान की आज्ञाओं का पहले से अधिक ख़याल रखती थीं। वह कहा करती थीं, कि वह मेरे लिए सदा ही जीते हैं, जीते जी तो वह ख़ुद अपनी आज्ञाओं को कहकर पूरा करा लेते थे, अब वह ख़ुद तो इस संसार में कहने वाले नहीं हैं, अब तो मेरी ही ज़िम्मेवारी है। बार बार यही सहाय प्रार्थना करती रहती थीं, कि पूजनीय भगवान मैं आप के लिए सच्ची रह सकूं।

वाह माता जी! आप निश्चय सदा सच्ची रही हैं!!

(18) वह बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी कोई वस्तु किसी से मांगना या उधार लेना पसंद नहीं करती थीं, बल्कि अपने पास कितनी ही ऐसी वस्तुएं रखती थीं, कि जो औरों को मांगने पर झट निकाल कर दे देती थीं। वह अपने पास कितने ही सुई धागे, कैंची, बटन और छोटे छोटे कपड़े के टुकड़े आदि रखती थीं और औरों को ज़रूरत के समय दे देती थीं।

(19) माता पूजनीया जी इतनी बड़ी पोज़ीशन रखकर भी बड़े बड़े घरों की स्त्रियों से मिलना जुलना इतना पसंद नहीं करती थीं, जितना ग़रीब घरों की स्त्रियों से मिलना जुलना पसंद करती थीं। कितनी ही ग़रीब दुखिया स्त्रियों को घंटों अपने पास बिठाकर उनके दुख तकलीफ़ की कहानी सुनकर उनके दिल को हल्का करके उन्हें बहुत धैर्य और शांति देती थीं। और अपने पास से कुछ न कुछ वस्तु देकर उन्हें ख़ुश कर देती थीं।

(20) जब कभी कोई रोगी या बीमार उन के पास होता, तब वह अपनी बीमारी और रोग को भूल जातीं, उस की ही सेवा टहल में लग जातीं। रात को कई कई बार उठकर उसकी ज़रूरतें पूरी करतीं, उसे तसल्ली और धैर्य देतीं। वह किसी बीमार की बीमारदारी करके घबराती और ज़िचबिच नहीं होती थीं, बल्कि बहुत तृप्ति अनुभव करती थीं। बहुत धैर्य और शांति पूर्वक उनकी सब प्रकार की सेवा करती थीं। रात को कई कई घंटे

जागकर भी वह घबराती न थीं, बल्कि ख़ुश रहती थीं।

(21) वह सदा ही बहुत खुश और प्रसन्न रहती थीं। ईर्षा द्वेष का भाव उनके भीतर जन्म काल से ही न था। वह आम स्त्रियों की न्याईं जलना कुढ़ना जानती ही न थीं, और न वह और स्त्रियों की तरह सांसारिक विषयों को लेकर इधर उधर की घंटों बातचीत ही करती थीं। वह कहा करती थीं, कि जब कोई बाहर की स्त्री मेरे पास आ जाती है तब चंद मिनटों में ही मेरी तबीयत घबराने लगती है। क्योंकि धर्म को लेकर मैं अधिक देर बातचीत कर सकती हूं, परन्तु मैं संसार के विषयों को लेकर उसके साथ अधिक देर तक बातचीत नहीं कर सकती। इसलिए जब कोई बाहर की स्त्री आती है, तब बड़ी दिक्क़त पड़ती है कि उस के साथ अब क्या बातचीत करूं।

(22) माता पूजनीया जी आम स्त्रियों की न्याईं घबराने और डरने वाली न थीं, परंतु बड़ी दलेर और बहादुर थीं। वह कई बार अकेली ही घर से बाहर कई कई मील सैर करने के लिए चली जाती थीं। पूजनीय भगवान के बाद वह क्या सोलन में और क्या लाहौर में और क्या अन्य स्थानों में अपने कमरे में अकेली ही रहतीं और अकेली ही सोती थीं।

(23) वह किसी जगह जाने वा रहने का जितने दिनों का प्रोग्राम बनातीं, उसे पूरा करने के लिए अपना सारा ज़ोर लगातीं, उतने ही दिन वहां रहना और ठहरना चाहतीं। उन्होंने सख़्त बीमारी की हालत में भी बहुत दूर दूर के और सैकड़ों मील के लम्बे लंबे सफ़र किए हैं। लाहौर से कराची और कराची से कालका और सोलन आदि गई हैं। उन्हें सफ़र में जैसा रूखा सूखा भोजन मिल जाता उसे खाकर ही प्रसन्न रहतीं, कभी कोई शिकायत आदि न करतीं। जैसे घर में दिन में दो बार भोजन करतीं, वैसे ही सफ़र में भी दो बार ही करतीं।

(24) वह खाने पीने के संबंध में बहुत परहेज़गार और संयमी थीं। जैसे आम स्त्री पुरुषों की आदत है, कि जब कोई चीज़ मिल जाय तभी खाने लग जाते हैं, वैसे माता पूजनीया जी नहीं करती थीं। किसी के कहने पर भी बेवक्त कोई चीज़ नहीं खाती थीं। क्या अपनी पोज़ीशन, क्या अपने आला दिल और दिमाग और क्या अपने नाना प्रकार के धर्म भावों के विचार से मुझ से हर पहलू में बड़ी होकर भी उन्होंने अपनी सेहत को ठीक रखने के लिए मुझ तुच्छ से यह कह छोड़ा था, कि तुम मुझ को जो कुछ और जितना कुछ खाने पीने को दोगे, वही कुछ मैं खाऊं और पिऊंगी। तुम जानो तुम ज़िम्मेवार हो। स्वाददार खाने पीने से भी आप बहुत ऊपर थीं। कई बार ऐसा होता कि माता पूजनीया जी को कोई चीज़ पसंद है, वह उसे खाना चाहती हैं, परंतु जब मैं कहता कि माता जी! इस से आप की खांसी न बढ़ जाय वा आप को कोई और सख़्त तकलीफ़ न हो जाय, तब वह कहतीं, अच्छी बात यह चीज़ मत दो, मैं नमक से ही रोटी खा लूंगी। कई बार उन्होंने ऐसा ही किया है। कई बार ख़ाली नमक से ही रोटी खाई है, परंतु यह नहीं कहा कि मुझ से अब खाना खाया नहीं जाता।

(25) आप के भीतर कृतज्ञता का भाव इस क़दर प्रबल था, कि पूजनीय भगवान के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उपकारों को सम्मुख लाकर आप विवश होकर रोने लग जाया करती थीं, और कहती थीं कि भगवान देवात्मा के मुझ पर बहुत उपकार हैं, मैं उनका क्या हित परिशोध करूं। मुझ में जो कोई अच्छी बात है, वह पूजनीय भगवान की ही पैदा की हुई है, मेरा अपना आप कुछ नहीं। उनके संबंध में बहुत शुक्रगुज़ार और कृतज्ञ महसूस करती थीं। सेवा करने वाले की एक वा दूसरी सेवा करके तृप्ति लाभ करतीं। जिस किसी से पैसे देकर सेवा लेतीं, उस को भी नियत पैसों से और अधिक पैसे देकर प्रसन्न होतीं। सोलन में एक स्त्री उनकी कुछ सेवा करने के लिए एक घंटे के लिए आया करती थी। उसके साथ घंटे के हिसाब से पैसे नियत थे।

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

माता जी घड़ी अपने सिरहाने रख लेतीं और जब घंटा हो जाता तब झट उसे छुट्टी दे देतीं। अगर घंटे से अधिक समय हो जाता, तब और अधिक पैसे दिलवातीं।

(26) दयानतदारी का भाव भी उनके भीतर बहुत प्रबल और सुंदर रूप में वर्तमान था। उनके हिसाब में जब कोई जन ख़र्च करता, तो जब तक वह उसे दिलवा न देतीं, तब तक चैन न पातीं। बार बार मुझ से पूछतीं, कि अमुक जन के पैसे तुम ने दे दिए या नहीं, न दिए हों, तो अभी दे दो। जब कभी कोई चीज़ किसी की उन के पास किसी वजह से रह गई है, तब उन्होंने बहुत संभाल कर रखी है, और वैसी की वैसी ही सुंदर हालत में उसके पास पहुंचा दी है।

(27) वह गुरु-पत्नी होकर भी अपने भीतर कोई घमंड वा अकड़ न रखती थीं। किसी के साथ किसी कारण से ज़रा भी उनका अन्मेल होता, तो जब तक वह मेल न कर लेतीं, तब तक चैन न पातीं। यहां तक कि अपने से बहुत ही छोटी हैसियत रखने वालों से भी माफ़ी मांग लेतीं और अफ़सोस का प्रकाश करतीं, और कहतीं कि यदि मेरे किसी बोल वा बर्ताव से किसी को कोई तकलीफ़ पहुंची है, तो उसके लिए मुझे माफ़ किया जाय। मुझ तुच्छ से भी उन्होंने कई बार अफ़सोस का प्रकाश किया है।

(28) वह इस क़दर पति अनुरागिनी थीं, कि और स्त्रियों को भी पति भक्ति की शिक्षा देती रहती थीं। जिन स्त्रियों का पतियों से अन्मेल होता, वह उन्हें बहुत समझातीं, और परस्पर मेल मिलाप कराने के लिए बहुत संग्राम और यत्न करतीं। एक एक स्त्री को लेकर घंटों तक समझातीं, उनके पतियों को भी समझातीं, कि इनकी बृद्ध अवस्था के लिए खाने पीने का काफ़ी बंदोबस्त कर जाओ, यह बेटे और बहुओं के हाथ की तरफ़ न देखें, आप का यह सच्चा कर्तव्य है, कि यह बिचारी रुलती न फिरें। दूसरों की स्त्रियों का उन्हें बहुत फ़िकर लगा रहता था।

(29) वह गुरु-पत्नी होकर भी अपने काम आप करना पसंद करती थीं। वह अपने कमरे में झाड़ू खुद देती थीं और अपने कपड़े खुद धोती थीं। वह अपने रसोई घर को बहुत साफ़ सुथरा रखती थीं, जब कोई चीज़ मैली देखतीं, तब झट आप साफ़ करने लग जातीं, यहां तक कि नालियां तक भी आप साफ़ करने लगतीं, मैलेपन से उनके भीतर बहुत नफ़रत थी। वह बहुत सफ़ाई पसंद थीं। जहां कहीं कोई मैली कुचैली जगह देखतीं, वहां झट झाड़ू लेकर खुद साफ़ करने लग जातीं। वह बाहर जाने पर किसी के घर में जब कुछ दिनों के लिए भी ठहरतीं, और जब वहां से आने लगतीं, तब उस घर को झाड़ू से खुद साफ़ करके वा किसी और से साफ़ कराकर आतीं।

शेष पृष्ठ 2 में

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts